दिनांक ....

पत्रांक ....

E. Content — B.A. History Hons. Paper V B.A. D III

History of India — Prof. Poonam choudhary
Chief Coordinator History
N.O.U.

Q) What were the Causes, Results and Importance of the Battle of Buxar?

बक्सर के युद्ध के कारण, परिणाम और महत्व क्या थे

Ans. — 23 अक्टूबर 1764 को लड़े गये इस युद्ध में एक ओर अंग्रेजी सेनायें थीं तथा दूसरी ओर बंगाल के भूतपूर्व नवाब मीरकासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाह आलम की संगठित सेनायें थीं।

बक्सर के युद्ध के कारण

1.) मीर कासिम का बंगाल के नवाब के पद से हटाया — सन् 1760 में मीरकासिम अंग्रेजों की सहायता से बंगाल का नवाब बना। उसने अंग्रेजों को विशाल धनराशि उपहार स्वरूप दी तथा बर्दवान, मिदनापुर एवं चटगाँव आदि के जिले दिये परन्तु योग्य शासक होने के नाते अंग्रेजों के इशारे परनाचना उसके लिये सम्भव नहीं था। अतः अंग्रेजों ने उसे नवाब के पद से हटा दिया। इस अन्याय के कारण मीरकासिम अंग्रेजों का कट्टर शत्रु बन गया और उसने उनसे युद्ध करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

2.) मीरकासिम द्वारा अंग्रेज बन्दियों की हत्या — अंग्रेज सेनापति मेजर एडम्स ने मीर कासिम

Scanned with CamScanner

की सेनाओं को कटवाह, गिरिया, मुर्शिदाबाद तथा मुंगेर आदि स्थानों पर पराजित किया। मीरकासिम अपने प्राणों की रक्षा के लिये पटना की ओर भाग गया। क्रोध से पागल मीरकासिम ने अंग्रेज समर्थक सैकड़ों व्यक्तियों की हत्या कर दी। बाद में उसने समरू नामक एक जर्मन की सहायता से लगभग 200 अंग्रेज बन्दियों की हत्या कर दी। इस हत्या-काण्ड ने अंग्रेजों को उत्तेजित कर दिया।

3.) अवध के नवाब शुजाउद्दौला की स्वार्थ पूर्ति के लिये मीरकासिम की सहायता — बंगाल से भागकर मीर कासिम पटना पहुंचा तथा पटना से वह अवध के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में चला गया। शुजाउद्दौला तथा उसके पूर्वज दीर्घ काल से बंगाल पर गिद्ध दृष्टि लगाये हुए थे, इसी कारण बंगाल पर अपने प्रभाव की वृद्धि करने के विचार शुजाउद्दौला मीरकासिम की सहायता को तत्पर हो गया।

इस प्रकार शुजाउद्दौला के सहमत हो जाने से अंग्रेजों के साथ उसका युद्ध अनिवार्य हो गया।

4) मीरकासिम, शुजाउद्दौला तथा शाह आलम में गठजोड़ — मुगल सम्राट शाह आलम इस समय अवध आया हुआ था। वह भी अंग्रेजों से बहुत क्षुब्ध था। इसका कारण यह था कि बंगाल और बिहार पर मुगल सम्राट के प्रभाव स्थापित करने के तीन प्रयासों को अंग्रेजों ने असफल कर दिया था। अतः वह भी अंग्रेजों के विरुद्ध इस संगठन में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की जोर शोर से तैयारी आरम्भ होने लगी।

Scanned with CamScanner

पृष्ठांक .....

बक्सर के युद्ध की घटनायें—

मीरकासिम, शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाह आलम की सम्मिलित सेनाओं ने बिहार की ओर अग्रसर होना आरम्भ किया। उन्हें कुछ फ्रांसीसियों ने भी सहायता दी। 1764 ई० के पूर्वार्द्ध में बिहार और अवध की सीमाओं के निकटवर्ती क्षेत्रों में ही अनेक मुठभेड़ें हुईं, परन्तु कोई निर्णय न हो सका। इसी बीच एक अत्यन्त योग्य सेनापति मेजर मुनरो को अंग्रेजी सेना के नेतृत्व का भार सौंप गया। 23 अक्टूबर, 1764 को गंगा नदी के तट पर स्थित बक्सर नामक स्थान पर दोनों सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध। दोनों ओर से काफी संख्या में सैनिक मारे गये। अन्त में इस युद्ध में अंग्रेज ही विजयी रहे। मुगल सम्राट शाह आलम ने अंग्रेजों से समझौता कर लिया तथा मीरकासिम युद्ध क्षेत्र से भाग गया। अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने अवश्य कुछ समय और युद्ध जारी रक्खा परन्तु अन्त में उसने भी कोटा नामक स्थान पर आत्म समर्पण कर दिया। इस प्रकार बक्सर का युद्ध समाप्त हुआ। किसी विद्वान ने कहा है, "इस प्रकार बक्सर के उस युद्ध, जिस पर भारत का भाग्य निर्भर था तथा जिसकी ही वीरता से लड़ा गया जितने कि उसके परिणाम महत्वपूर्ण हैं, का अन्त हुआ।"

बक्सर के युद्ध के परिणाम — मीर कासिम युद्ध क्षेत्र से भाग गया था। इस समय क्लाइव भारत का दूसरी बार गवर्नर जनरल बनकर आ गया था। उसने मुगल सम्राट

Scanned with CamScanner

शाह आलम तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सन्धि कर ली। इतिहास में यह सन्धि 'इलाहा की सन्धि' के नाम से प्रसिद्ध है। इस सन्धि की प्रमुख शर्तें निम्न थीं—

(i) शुजाउद्दौला को अवध का प्रदेश पुनः सौंप दिया गया परन्तु उसके कड़ा तथा इलाहाबाद के दो जिले उससे छीन लिये गये।

(ii) शुजाउद्दौला ने युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिये अंग्रेजों को पचास लाख रुपया देना स्वीकार किया।

(iii) अंग्रेजों ने अवध के नवाब को सैनिक सहायता देना स्वीकार किया, परन्तु इन सेनाओं का व्यय उसे ही सहन करना था।

(iv) कम्पनी को अवध के प्रदेश में बिना किसी प्रका के कोड़ी कर दिये व्यापार करने की अनुमति मिल गई

(v) अवध के नवाब से लिये गये कड़ा तथा इलाहाबा के जिले मुगल सम्राट को दे दिये गये।

(vi) मुगल सम्राट शाह आलम को 26 लाख रुपया वार्षिक पेन्शन निश्चित कर दी गई।

(vii) मुगल सम्राट शाह आलम ने प्रसन्न होकर बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को सौंप दी, अर्थात् अब इन तीनों के कर एकत्रित करने का अधिकार अंग्रेजों को मिल गया।

बक्सर युद्ध के महत्व — बक्सर के युद्ध का

महत्व किसी भी प्रकार से क्लाइव के युद्ध से कम नहीं है। इस युद्ध ने न केवल क्लाइव के अपूर्ण कार्य को पूर्ण किया, वरन् उसने ब्रिटिश कम्पनी को एक पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न शक्ति बना दिया। एक विद्वान ने कहा है, "बक्सर के युद्ध ने ईस्ट-इण्डिया कम्पनी को भारत में एक प्रभुसत्ता सम्पन्न शक्ति बना दिया।"

निःसंदेह क्लाइव के युद्ध का विशेष महत्व था, अंग्रेज इसी युद्ध के कारण बंगाल में अपने आपको स्थापित कर सके। बंगाल से प्राप्त होने वाले धन से ही अंग्रेज फ्रांसीसियों तथा अन्य भारतीयों के प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर सके। विद्वानों का कथन है कि यदि अंग्रेजों ने क्लाइव के युद्ध में विजय न प्राप्त की होती, तो सम्भवतः वे बक्सर के युद्ध में भी विजय प्राप्त न कर पाते। परन्तु फिर भी दोनों युद्ध की घटनाओं तथा परिणामों की तुलनात्मक व्याख्या करते हुये अनेक इतिहासकारों ने बक्सर के युद्ध को ही अधिक महत्व दिया है। इस युद्ध को अधिक महत्वपूर्ण मानने के सम्बन्ध में अनेक तर्क प्रस्तुत किये गये हैं, जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं:—

सर्वप्रथम क्लाइव का युद्ध एक साधारण मुठभेड़ थी, जबकि बक्सर का युद्ध एक भीषण युद्ध था। क्लाइव के युद्ध में अंग्रेजों के केवल 65 तथा भारतीयों के 500 सैनिक मारे गये, वहाँ बक्सर के युद्ध में इससे

Page 6

कहीं अधिक क्षति हुई। इस युद्ध में अंग्रेजों के 847 तथा भारतीयों के 2000 सैनिक मारे गये।

विद्वानों का यह भी कथन है कि बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों ने अपनी सैन्य शक्ति का अच्छा प्रदर्शन किया तथा भारतीय शक्तियाँ पहिले की अपेक्षा उनका अधिक लोहा मानने लगीं। यथार्थ में अंग्रेजों ने प्लासी का युद्ध षड्यन्त्र के बल पर जीता था न कि सैन्य बल पर। इस सम्बन्ध में डॉ॰ आर॰ सी॰ मजूमदार का कथन है, "प्लासी के युद्ध का निर्णय अंग्रेजों की जन्मजात युद्ध कला की श्रेष्ठता की अपेक्षा षड्यन्त्र तथा धोखेबाजी से अधिक हुआ था। यदि बंगाल में उनके अधिकार केवल इसी युद्ध पर निर्भर रहते तो उनकी बंगाल विजय का श्रेय किसी उचित युद्ध को न होकर राजनैतिक षड्यन्त्रों को ही होता। परन्तु मीर कासिम तथा उनके सहयोगियों की पराजय को किसी अचानक तथा आशा रहित धोखेबाजी, जैसी कि सिराजुद्दौला के साथ हुई थी, का परिणाम नहीं माना जा सकता। यह सत्ता प्राप्ति के लिये दो परस्पर विरोधी दावेदारों, जो कि इसकी सम्भावनाओं से पूर्ण परिचित थे तथा जिन्हें इसके परिणामों का आभास था, के बीच सीधा संघर्ष था।"

इसके साथ ही विद्वानों का यह भी कथन है कि जहाँ प्लासी के युद्ध के परिणामस्वरूप अंग्रेजों का बंगाल पर अधिकार केवल नाममात्र ही था, परन्तु बक्सर के युद्ध के उपरान्त बंगाल पर उनका व्यावहारिक अधिकार हो गया। एक विद्वान का कथन है, "मीर-कासिम के साथ संघर्ष ने अंग्रेजों को बंगाल के विजेता के रूप

में प्लासी के युद्ध की अपेक्षा अधिक वास्तविक रूप में स्थापित कर दिया।"

इसी प्रकार रैम्से म्यूर का कथन है, "बक्सर के युद्ध ने बंगाल पर कम्पनी के शासन को अन्तिम रूप में जकड़ दिया।"

इसके अतिरिक्त विद्वानों का यह भी कथन है कि बक्सर के युद्ध के परिणाम प्लासी के युद्ध के परिणामों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। इस सम्बन्ध में सरकार एण्ड दत्ता का कथन है, "बक्सर का युद्ध परिणामों की दृष्टि से प्लासी के युद्ध से अधिक निर्णायक था। प्लासी के युद्ध के परिणामस्वरूप कम्पनी बंगाल के सिंहासन पर अपना एक कठपुतली नवाब बैठा सकी तथा निःसन्देह उसके सम्मान में भी आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। परन्तु इससे भी कुछ अधिक किया। बंगाल पर अपने नियन्त्रण को और अधिक सुदृढ़ करने के साथ-साथ उन्हें इस युद्ध के परिणामस्वरूप सूबे के उत्तरी-पश्चिम भाग (उत्तर-प्रदेश) पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने का अवसर मिला। यदि प्लासी के युद्ध से बंगाल के नवाब की पराजय हुई तो बक्सर ने उससे भी महान शक्ति अवध के नवाब और यहाँ तक कि मुगल सम्राट की पराजय की घोषणा कर दी।"

—— × ——

Scanned with CamScanner